खुली कक्षा – एक नया प्रयोग

PAPER APPEARED IN PRIMARY TEACHER, A NCERT JOURNAL, OCTOBER, 1991

डा. ए.के. पाण्डेय
प्राचार्य
एन.एम.डी.सी. प्रोजेक्ट विद्यालय
मझगवां माइन्स, पन्ना (म.प्र.)

(प्रस्तुत लेख में स्वयं द्वारा किये गये एक प्रयोग का उल्लेख है। यह प्रयोग प्राथमिक कक्षा पर किया गया है। तथा इसका मुख्य उद्धेश्य सिर्फ, नवीनता है। यह एक लघु शोध कार्य है।)

एक बड़े शहर के एकप्राइमरी स्कूल में पढ़ाते समय मुझे यह एहसास हुआ कि शायद मैं इस नौकरी को तभी तक कर रहा हूँ जब तक कि मुझे कोई दूसरी नौकरी नहीं मिलती है। छोटे–छोटे क्लास रूम, फर्नीचर की कमी तथा बच्चों की अधिकता के कारण मुझे स्कूल जाने में भय लगने लगा था। मुझे यह समझ में नहीं आ रहा था कि किस प्रकार लाखों प्राइमरी स्कूल शिक्षक अपने कार्य को करते है। शायद मेरी ही तरह वे भी मजबूरी में इसकार्य को कर रहे है। मैं अपना वह दिन याद कर आज भी कांप जाता हूँ जब बिना मन से पढ़ाये गये पाठ को बिना मन से पढ़े बच्चे याद करके नहीं आ पाते थे और मैं उन्हें अपनी लाल–लाल आखों से घूरकर तथा कभी–कभी पीटकर आत्म संतोष का अनुभव करता था। सोचने पर समझ में नहीं आता था कि गलती कहां हो रही है।

लेकिन इस बोरियत से बचने के लिए मैंने एक रास्ता निकाला। मैंने तय किया कि जब इसी नौकरी में रहना है तो क्यों नहीं मन बहलाने के लिये कोई नई चीज खोजी जाय। मैंनें अपनी कक्षा के ऊपर एक प्रयोग करने की बात सोची। मैं वह जानता था कि किसी भी नये प्रयोग के लिये मुझे इससे सम्बन्धित ज्ञान की जरूरत होगी। पहले मैंने अपनी कक्षा के आग्रेना हजैगम पर ध्यान दिया जो कि पढ़ाई के ऊपर कुछ प्रभाव डाले। इसके पहले स्कूल में किये गये कार्यो का अनुभवों का इस बदली परिस्थिति में उपयोग करने का निश्चय किया कि मेरे क्लास के कमजोर बच्चों जो मुख्यतः अग्रेंजी तथा गणित के थे, पर मैं अपने नये विचार काप्रयोग करना चाहता था। अब भी मैं अपने ऊपर के बन्धन से डर रहा था। क्योंकि मुझे यह मालूम था कि मेरा मैनजमेंट इस प्रयोग में सहयोग नहीं करेगें। यह सोचते हुए भी मैं अपने नये प्रयोग में जुट गया।मैं अपने प्रोजेक्ट को निम्न रूप में आपके सामने रख रहा हूँ :–

1. साधारण विचार :

मेरी कक्षा में पहले जो भी परिवर्तन किये गये थे वे अन्दाज रूप में ही थे। अब मैं जो परिवर्तन करने जा रहा था उसके सारे पहलुओं को मैंने विशेष ध्यान दिया। परिवर्तन मुख्यतः मैं इस लिये करना चाहता था – ताकि मेरा अपना कार्य कुछ घंटे (बच्चों को हिसाब बनवाते समय मुझे हमेशा उन पर ध्यान रखना पड़ता था) मैं सोच

रहा था कि ऐसा करने से समय की बचत होगी तथा बच्चों को अपने से कार्य करने की लगन उत्पन्न होगी। मैं समय–समय पर उन्हें मदद करता रहता था तथा बाकी समय का उपयोग उनके लिये नये प्रकार के प्रश्न खोजने में लगाता था। चॅकि बच्चे अपने अनुसार कार्य करते थे।

अतः तेज बच्चे और नहीं होते थे तथा कमजोर बच्चों को कार्य करने के लिये अधिक समय मिल जाता था। पहले मैं एक ही पाठ को तेज तथा कमजोर लड़के दोनों को पढ़ाता थाजिससे धीरे–धीरे तेज बच्चों में पढ़ाने के प्रति अरूचि उत्पन्न होती जा रही थी।

टारगेट ग्रुप के कार्यो के सही संपादन के लिये मैंने एक पोरटेबल टेपरिकार्डर का उपयोग करना शुरू कर दिया। मैं अपने उद्धेश्य को बच्चों को बता भी दिया । शुरू में टेप रिकार्डर देखकर बच्चों थोडा डरे लेकिन एक सप्ताह के बाद स्वाभाविक रूप से कार्य करने लगे। मैं अपने साथ एक डायरी रखताथा जिसमें मैं समस्त बातों को लिखा करता था । कभी–कभी तो मुझे बहुत झुझलाहट होती थी क्योकि एक ही क्लास में पांच –छः ग्रुप को देखना पडता था ।

मैंने इस प्रयोग को चक्र की भांति घुमाना शुरू कर दिया ।

2. ***कार्य पद्धति***

विषय के अनुसार काल–खंड न देकर ग्रुप काल–खंड देगी शुरूकिया मैंने प्रत्येक काल खंड के लिये एक घंटा दिया ।

मैंने विषय कार्य का ठीक से अध्ययन कर उसे इकाइयों में बांटा

इकाई परीक्षा के लिये परीक्षण की व्यवस्था की ।

इकाई परीक्षा की कापियों को भी मैंने बच्चोंसे ही दिखलाना शुरू किया जिससे उनके अन्दर उपर उठने की भावना की शुरूआत हुई

सोसियोमेट्री के आधार पर मैंने ग्रुप का गठन किया जिससे बच्चों के अन्दर दोस्ताना व्यवहार उत्पन्न हो गया और उनके अन्दर विशेष ग्रुप भावना का विकास हुआ

3. ***कार्यनुभव***

मैंने अपने ऊपर तुरंत ही कार्य के बीच की कमी को महसूस किया चूंकि किताबों की संख्या बहुत कम थी अतः ग्रुप में बंट जाने से यह कमी दूर हो गई । पहले एक ग्रुप से दूसरे ग्रुप में कार्य बंटवारे के कारणा समय ज्यादा लगता था । लेकिन धीरे धीरे वह भी एक रास्ते पर चलने लगा ।

4. ***परिवर्तन***

यह प्रयोग कार्य तो अच्छा कर रहा था लेकिन मैंने इसमें भी कुल कमियां पाई, जैसे–

(क) हिसाब के लिये एक घंटा कम पडता था ।

(ख) कुछ बच्चों के ऊपर विशेष ध्यान देना पडता था नहीं तो वे एक घंटे कासमय किसी तरह से काट देते थे ।

(ग) मैं अपने समय का अभी भी पूर्णतया उपयोग नही कर पा रहा था ।

(घ) कुछ बच्चों में व्यक्तिगत अंतर होने के कारण वे किसी भी ग्रुप के साथ कुछ नहीं पाते थे । अतः वे एक समस्या बन गये थे । 5. ***परिवर्तित कार्य पद्धति***

मैंने बच्चों के ऊपर ही ग्रुप बनाना तथा कार्य के बंटवारे का काम छोड दिया तथा उन्हें इतनी भी स्वतंत्राता दे दी कि वे चाहें तो एक घंटे के बदले किसी विषय के लिये दो घंटे का भी समय ले सकते है ।

6. ***उद्धेश्य प्राप्ति***

यह प्रयोग काफी सफल रहा । यह प्रयोग सैद्धान्तिक था लेकिन मैंने इसे विशेष उद्धेश्य के लिये कुछ सांख्यिकी का भी प्रयोग किया जिससे की निम्नलिखित तथ्य सामने आये –

(क) लडकों तथा लडकियों के आउट पुट में कोई मान्य अन्तर नहीं पाया गया ।

(ख) इस तरह से पढाये गये बच्चों तथा ट्रैडिशनल विधि द्वारा पढाये गये बच्चों के बीच   पाया गया जो 0ण्01 पर मान्य था ।